शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 मई 2013

सामाजिक विकास गाजीपुर जनपद उत्तर प्रदेश

डॉ अजीत कुमार यादव
प्राचार्य गुरूकुल महाविद्यालय
पत्थलगांव जिला, जशपुर (छ0ग0)

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध प्रपत्र गाजीपुर जनपद (उ.प्र.) में सामाजिक विकास नियोजन से सम्बन्धित है। अध्ययन क्षेत्र मध्य गंगा मैदान के उपजाऊ एवं सघन जनसंख्या वाला क्षेत्र हैं। क्षेत्र मे सामाजिक विकास के चरों का जाल असमान रूप में है। फलस्वरूप क्षेत्र के नगरीय क्षेत्रों में शैक्षणिक स्वास्थ्य, संचार एवं मनोरंजन सेवाओं का वितरण सघन एवं ग्रामीण तथा दूरवर्ती क्षेत्रों मे सामाजिक विकास के चरों का वितरण मध्यम स्तर के होने के कारण क्षेत्र के उत्तरी पश्चिमी भागों में सामाजिक विकास का स्तर अति उच्च कोटि का पाया जाता है। जबकि दक्षिणी पूर्वी तथा दक्षिणी भागों में निम्न कोटि का सामाजिक विकास स्तर पाया जाता है। यदि अध्ययन क्षेत्र में सामाजिक सेवाओं के अन्तर्गत शैक्षणिक, स्वास्थ्य, मनोरंजन एवं सुरक्षा सम्बधी सेवाओं का नियोजन किया जाय तो विकास का स्तर उच्च कोटि का हो सकता है। क्योंकि किसी भी क्षेत्र के विकास का आधार मानव समाज के विकास पर निर्भर करता है, इसलिए सामाजिक विकास स्तर का निर्धारण मानव के शैक्षणिक, स्वास्थ्य मनोरंजन एवं सुरक्षा सम्बधी सेवाओं के विकास एवं नियोजन से परिलक्षित होता है।

भूमिका-

सामाजिक विकास के चर के माध्यम से किसी क्षेत्र या प्रदेश का संतुलित एवं समन्वित विकास संभव है। उच्च तकनीकी शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं से मानव सभ्यता का विकास होता है। आर्थिक विकास का आधार सामाजिक विकास के चर है, पाण्डेय, रेखा 14 (1993) ने सामाजिक संरचना को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि सामाजिक संरचना परस्पर क्रिया करते हुए सामाजिक शक्तियों का जाल है, जिससे निरीक्षण और चिन्तन की विभिन्न प्रणालियों का जन्म होता है। सामाजिक विकास का निर्माण सामाजिक विकास के चरों के माध्यम से होता है। ये सामाजिक विकास के चर एक दूसरे से परस्पर सम्बन्धित होते हुए कार्य करते हैं तथा निरीक्षण एवं चिन्तन की पद्धतियों को जन्म देते है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है वह समाज के अन्य सदस्यों के साथ मिल जुलकर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। अर्थात व्यक्ति समाज के अभाव में न तो अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता है और न ही जीवित रह सकता है। इसलिए मानव सभ्यता के विकास के लिए सामाजिक विकास के चरों का महत्वपूर्ण योगदान होता है, जिससे मानव अपने क्रिया-कलापों के आधार पर क्षेत्र का समन्वित विकास करके एक आदर्श नागरिक बन जाता है। सामाजिक सेवायें क्षेत्र के विकास का आधार होती है। किसी भी क्षेत्र का समन्वित विकास सामाजिक सेवाओं के वितरण पर निर्भर करती है। सामाजिक सेवाओं के अन्तर्गत शिक्षण संस्थाए, स्वास्थ्य सेवाएं, मनोरंजन एवं प्रशासनिक सेवाओं को सम्मिलित किया जाता हैं। यदि इन सेवाओं का वितरण जिन क्षेत्रों में अधिक पाया जाता है, वहां पर मानव का शैक्षणिक स्तर उच्च, उत्तम स्वास्थ्य एवं शांतिमय वातावरण का विकास होना संभव है। साथ ही जिन क्षेत्रों में

मानव के लिए इन सुविधाओं का आभाव है, वहां सामाजिक विकास का स्तर निम्न कोटि का पाया जाता है।

समन्वित ग्रामीण विकास किसी क्षेत्र में सामाजिक-आर्थिक क्रियाओं के समुचित वितरण एवं अवस्थिति से सम्बन्धित है, जिससे उसका संतुलित विकास हो सके। साथ ही यह प्रत्येक के लिए न्यूनतम एवं जहां तक संभव हो उच्च स्तर से सम्बन्धित है। समन्वित ग्रामीण विकास की उपयुक्त संकल्पनात्मक व्याख्या से स्पष्ट है कि ग्रामीण क्षेत्र का संतुलित विकास करके उनके जीवन की गुणवत्ता में वृद्वि करके क्षेत्र का विकास संभव है (तिवारी, 1998) 5। ग्रामीण विकास वास्तव में सामाजिक-आर्थिक विकास का ही एक अंग है। लेकिन इसमें क्षेत्र विशेष के सन्दर्भ में ग्रामीण भूदृश्य के रूपान्तरण पर बल दिया जाता है। एक सीमा तक इसको समन्वित ग्रामीण विकास का पर्याय माना जा सकता है। यद्यपि ग्रामीण विकास को किसी नगरीय विकास के सन्दर्भ में अलग नहीं किया जा सकता । क्योंकि विकास प्रक्रिया किसी भी क्षेत्र में समन्वित रूप में घटित होती है, जिसमें ग्रामीण अथवा नगरीय दोनो संरचनात्मक रूप होते हैं। इसलिए समन्वित ग्रामीण विकास में ग्रामीण सामाजिक एवं आर्थिक तंत्र रूपान्तरित होता है, (आर्य,1999) 6।

अध्ययन क्षेत्र

गाजीपुर जनपद उत्तर प्रदेश एवं वाराणसी मण्डल के पूर्वी भाग में 25019' से 25054' उत्तरी अक्षांश एवं 8304' से 83058' पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। यह जनपद पूर्व में बिहार राज्य के बक्सर जनपद से, पश्चिम में जौनपुर, दक्षिण में चन्दौली, दक्षिण-पश्चिम में वाराणसी, उत्तर-पश्चिम में आजमगढ, उत्तर में मऊ एवं उत्तर-पूर्व में बलिया जनपद से घिरा हुआ है। जनपद का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 3,377 वर्ग किमी. है, जो राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 1.5 प्रतिशत है। इस जनपद की पूर्व-पश्चिम की ओर लम्बाई 89 किमी. एवं उत्तर-दक्षिण की ओर चैड़ाई 59 किमी. है। प्रशासनिक दृष्टिकोण से गाजीपुर जनपद 5 तहसीलों, 16 विकासखण्डों, 193 न्यायपंचायतों, 1050 ग्रामपंचायतों, 3364 ग्रामों (2665 आबाद ग्राम एवं 699 गैर आबाद ग्राम) में विभक्त है। 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या 36,22,727 है, जिसमें 18,56,584 पुरूष एवं 17,66,143 महिलायें हैं। यहां का औसत जनघनत्व 1072 व्यक्ति/वर्ग किमी, साक्षरता 74.27: एवं लिंगानुपात 951 है।

विधितंत्र

प्रस्तुत शोध पत्र में सामाजिक विकास स्तर ज्ञात करने हेतु चरों के निर्धारण में द्वितीयक आकड़ों का उपयोग किया गया है। सामाजिक विकास स्तर हेतु चयनित चरों का सांख्यिकीय विधि के अंर्तगर्त Z Score विधि का उपयोग करके विकासखण्डों को निम्न श्रेणियों में विभक्त करके विश्लेषण किया गया है।

सामाजिक विकास के चर -किसी भी क्षेत्र के विकास में सामाजिक चरों महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इन्ही चरों की प्रधानता से मानव का जीवन स्तर, स्वास्थ्य ,मनोरंजन सुरक्षा रहन सहन आदि का ज्ञान होता है। साथ ही क्षेत्रीय विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। अध्ययन क्षेत्र में सामाजिक विकास के निर्धारण मे निम्न चरों का चयन किया है।

सामाजिक विकास के चर - सामाजिक विकास के चर ही सम्पूर्ण का समन्वित विकास स्तर निर्धारित करते है। पाण्डेय एवं पाण्डेय15 (1990)। क्षेत्र में सामाजिक विकास हेतु निम्न चरों का चयन किया गया है।

शिक्षा व्यवस्था - शिक्षा आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तन की अन्तर्धारा है। किसी भी क्षेत्र के विकास का आधार मानव है। यदि मानव शिक्षित होगा तभी क्षेत्र का सुनियोजित विकास होगा। कृषि क्षेत्र में यदि कृषक शिक्षित है तो कृषि यंत्रों का उचित प्रयोग करके ग्रामीण विकास कर सकता है। इसी प्रकार औद्योगिक क्षेत्र में कुशल श्रमिक ही औद्योगिक विकास कर के किसी भी क्षेत्र का विकास कर सकता है। क्षेत्र में कुल प्राथमिक विद्यालयों की संख्या 2,963 है। सादात विकासखण्ड में 185, देवकली में 183 जमानिया में 182, सैदपुर में 179 एवं रेवतीपुर विकासखण्ड में 100 प्राथमिक विद्यालय है। क्षेत्र में पूर्व माध्यमिक विद्यालयों की कुल संख्या 543 है। सैदपुर विकासखण्ड में 55, देवकली में 48 सादात 46 एवं भावरकोल विकासखण्ड में 17 पूर्व माध्यमिक विद्यालय हैं।

यहां पर माध्यमिक विद्यालयों की कुल संख्या 532 है। जखनिया विकासखण्ड में 100, देवकली में 80, सादात में 61, सैदपुर में 60 एवं वाराचवर, कासिमाबाद विकासखण्ड में 11-11 माध्यमिक विद्यालय हैं। स्नातक एवं स्नातकोत्तर महाविद्यालय की कुल संख्या 106 है। सादात एवं सैदपुर विकासखण्ड में 12-12, जखनिया में 11, गाजीपुर में 10, जमानिया में 8, मनिहारी में 7 एवं भदौरा, भावरकोल एवं विरनों विकासखण्ड में 4-4 स्नातक स्नातकोत्तर महाविद्यालय हैं।

चिकित्सा व्यवस्था - किसी भी क्षेत्र का संतुलित विकास स्वस्थ्य मानव के क्रिया-कलापों द्वारा संभव है। मानव को स्वस्थ्य रखने के लिए अच्छी चिकित्सा व्यवस्था की आवश्यकता होती है। उसी प्रकार पशुओं के विकास के लिए एवं उनकी सुरक्षा हेतु चिकित्सा अनिवार्य तत्व है। जो सामाजिक विकास का नियामक है।

चिकित्सालय - क्षेत्र में चिकित्सालयों की कुल संख्या 69 है। मुहम्मदाबाद विकासखण्ड में 7, मनिहारी, गाजीपुर में 6-6 एवं रेवतीपुर एवं भदौरा विकासखण्ड में मात्र 2-2 चिकित्सालय है। यहां पर प्राथमिक एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र की कुल संख्या 62 है। रेवतीपुर, देवकली एवं विकासखण्ड में 5-5, जखनिया, विरनों, मरदह एवं जमानिया में प्राथमिक एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र 3-3 हैं।

मातृशिशु कल्याण केन्द्र - इस कार्यक्रम के अन्तर्गत शिशु पंजीकरण गर्भवती महिलाओ का किया जाता है। गर्भावस्था के दौरान महिलाओं की जांच की जाती है एवं उन्हें संतुलित आहार हेतु सुझाव दिया जाता है। सुरक्षित प्रसव के समय सुरक्षित प्रसव प्रशिक्षित नर्सो द्वारा कराने की सुविधा है। बच्चे के जन्म के उपरान्त उपकेन्द्र के ए. एन. एम. द्वारा जन्म के बाद की सेवायें दी जाती हैं। मां को प्रसव के बाद स्वास्थ्य शिक्षा एवं इलाज किया जाता है। क्षेत्र में मातृ एवं शिशु कल्याण केन्द्र एवं उप केन्द्रों की संख्या 395 है। मुहम्मदाबाद विकासखण्ड में 22, सादात, सैदपुर एवं कासिमाबाद में 28-28 देवकली में 27 एवं करण्डा विकासखण्ड में मातृ शिशु कल्याण केन्द्र एवं उप केन्द्रों की संख्या 18 है।

आंगनवाडी केन्द्र - ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं को उच्च जीवन स्तर एवं उन्हें साक्षर बनाने के लिए आगनवाड़ी की व्यवस्था की गयी है। क्षेत्र में कुल आगनवाड़ी केन्द्रों की संख्या 2108 है। जमानिया विकासखण्ड में 165, देवकली में 153, सैदपुर में 152, मुहम्मदाबाद में 146 कासिमाबाद में 145 एवं विरनों विकासखण्ड में 93 आंगनबड़ी केन्द्र हैं।

पशु चिकित्सालय - क्षेत्र में पशु चिकित्सालयों

शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 मई 2013

क्रम	Z Score	विकास स्तर	विकासखंडो की संख्या	विकासखंडो का प्रतिशत
1	>. 8	अति उच्च	3	18.75
2	.4 से +8	उच्च	2	12.50
3	0 से .4	मध्यम	4	25.00
4	0 से .4	मध्यम न्यून	3	18.75
5	> .4	न्यून	4	25.00

की कुल संख्या 29 है। सादात एवं कासिमाबाद विकासखण्ड में 3-3 वाराचवर, जमानिया, विरनों, भावरकोल, मुहम्मदाबाद एवं गाजीपुर विकासखण्ड में 1-1 पशु चिकित्सालय है। यहां पर पशुधन सेवा केन्द्र एवं कृत्रिम गर्भाधान केन्द्रों की कुल संख्या 57 है। गाजीपुर विकास खण्ड में 7 मुहम्मदाबाद में 5, मरदह, भावरकोल में 5-5 एवं सादात, भदौरा विकासखण्ड में 1-1 कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र हैं।

मनोरंजन - किसी भी क्षेत्र के सामाजिक विकास में मनोरंजन के साधनों की महत्वपूर्ण उपादेयता होती है। मनोरंजन के साधनों द्वारा किसी भी विषय पर दी गयी जानकारी क्षेत्र वासियों को मिल जाती है। साथ ही मनोरंजन से मनुष्य अपने स्वास्थ्य की देख भाल अच्छी तरह से कर सकता है। क्षेत्र में कुल मनोरंजन केन्द्रों की संख्या 32 है। गाजीपुर विकासखण्ड में 4, मुहम्मदाबाद जमानियां सादात में 3-3 एवं भदौरा, विरनों, मरदह, करण्डा एवं वाराचवर विकासखण्ड में 1-1 मनोरंजन केन्द्र है।

स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में कृषि विकास को प्रभावित करने वाले चरों के माध्यम से कृषि विकास स्तर ज्ञात किया गया है। सामाजिक विकास स्तर ज्ञात करने के लिए विकासखण्डानुसार चरों के मूल्यों का औसत एवं प्रमाणिक विचलन ज्ञात करके सूत्र द्वारा प्रत्येक चर का Z score ज्ञात किया गया है।

Z Score = $X-X^{\&}$

X = विकास खण्ड अनुसार चरों का मूल्य

$X^{\&}$= चरों का औसत मूल्य

सामाजिक विकास स्तर ज्ञात करने के लिए विकासखण्डानुसार चरों के मूल्यों का औसत एवं प्रमाणिक विचलन ज्ञात करके समन्वित मूल्य ज्ञात किया गया है, जिसका परास 0 से धनात्मक 9.34 एवं 0 सेऋणात्मक 7.55 है। तालिका संख्या 1.1 में प्रदर्शित है।

तालिका संख्या 1.1

गाजीपुर जनपद में सामाजिक विकास का स्तर

सामाजिक विकास का क्षेत्रीय प्रतिरूप-सामाजिक विकास का स्तर Z.Score विधि से ज्ञात कर उसका क्षेत्रीय वितरण प्रतिरूप निरूपित किया गया

1. अति उच्च विकास स्तर - इसके अन्तर्गत क्षेत्र के 3 विकासखण्ड देवकली, सैदपुर एवं सादात सम्मिलित है, जिसका विस्तार क्षेत्र के उत्तरी पश्चिमी भाग में है। इन क्षेत्रों में उच्च सामाजिक सुविधाएं पायी जाती है, जिसके कारण यहाँ ग्रामीण विकास स्तर उच्च है।

2. उच्च विकास स्तर-इसके अन्तर्गत क्षेत्र के 2 विकासखण्ड गाजीपुर एवं मुहम्मदाबाद सम्मिलित है, जिसका विस्तार क्षेत्र के मध्यवर्ती भाग में है। ये दोनों ही क्षेत्र नगरीय केन्द्र होने के कारण सामाजिक विकास की दशाएं अपने अपने क्षेत्रों में सम्पन्न हुए है।

3. मध्यम विकास स्तर - इसके अन्तर्गत क्षेत्र के

4 विकासखण्ड मनिहारी, जखनियां, जमानिया एवं कासिमाबाद सम्मिलित है, जिसका विस्तार क्षेत्र के उत्तरी पश्चिमी एवं उत्तरी भाग में है। यहाँ सामाजिक विकास स्तर सामाजिक सुविधाओं के कारण मध्यम स्तर की है।

4. मध्यम न्यून विकास स्तर - इसके अन्तर्गत क्षेत्र के 3 विकासखण्ड रेवतीपुर, भावरकोल, वाराचवर हैं जिनका विस्तार क्षेत्र के दक्षिणी पूर्वी भाग एवं उत्तरी पूर्वी भाग में हैं। इन क्षेत्रों में सामाजिक सुविधायें (शिक्षा, चिकित्सा, मनोरंजन) कम पायी जाती है।

5. न्यून विकास स्तर - इसके अन्तर्गत क्षेत्र के 4 विकासखण्ड मरदह, भदौरा, करण्डा एवं विरनों सम्मिलित है। जिसका विस्तार क्षेत्र के उत्तरी-पूर्वी तथा दक्षिणी क्षेत्रों में स्थित है। जहां पर सामाजिक सुविधाओं (शिक्षा, मनोरंजन, स्वास्थ्य) की कमी के कारण सामाजिक विकास का स्तर न्यून है।

स्पष्ट है कि सामाजिक विकास का अति उच्च स्तर क्षेत्र के उत्तरी पश्चिमी भाग में अधिक पाया जाता है। यहां पर शिक्षा का स्तर उच्च है। मध्यवर्ती भाग में उच्च विकास स्तर पाया जाता है। क्षेत्र के उत्तरी एवं दक्षिणी भाग में षिक्षा का मध्यम स्तर पाया जाता है तथा दक्षिणी पूर्वी एवं उत्तरी पूर्वी क्षेत्र में सामाजिक सुविधाओं के कम विकास के कारण मध्यम न्यून स्तर है लेकिन उत्तरी एवं दक्षिणी पूर्वी क्षेत्र में सामाजिक सुविधाओं के अभाव में यहां पर सामाजिक विकास का स्तर न्यून पाया जाता है।

मानव एक विवेकशीलप्राणी है। उनके विकास के लिए शैक्षणिक स्वास्थ्य, मनोरंजन एवं सुरक्षात्मक सुविधाओं का नियोजन वर्तमान समय में अधिक उपादेय है। इसी दृष्टिकोण से अध्ययन क्षेत्र मे व्यावसायिक शिक्षा के नियोजन की आवश्यकता है। इन क्षेत्रों के महाविद्यालयों की संख्या अधिक है।इसलिए उच्च कोटि की शिक्षण प्रणाली नियोजित करने की आवश्यकता है। क्षेत्र मे उत्तम कोटि स्वास्थ्य सेवाओं के नियोजन की जरूरत है। यदि क्षेत्र में स्वास्थ्य सम्बधी सेवाओं के अन्तर्गत उच्च कोटि के अस्पताल की सुविधा उपलब्ध करायी जाये तो क्षेत्रवासियों के स्वास्थ्य सम्बधी समस्याओं को हल किया जा सकता हैं। मनोरंजन सेवाएं मनुष्य के चिन्त को शान्त तथा खुश बनाये रखने में महत्वपूर्ण योगदान देती है। इसीलिए क्षेत्र मे पार्क एव सिनेमा घर स्थावित करके मनोरंजन सुविधाओं के लिए जतन की आवश्यकता है।

प्रषासनिक सेवायें क्षेत्र में शांति एवं सुरक्षा का प्रतीक है। इसलिए क्षेत्र मे पुलिस चैकी थाना की स्थापना करने की आवश्यकता है।

किसी क्षेत्र का संतुलित एवं समन्वित विकास मानव समाज के विकास का आधार है। इसलिए मानव का सेवाओं के विकास शैक्षणिक, स्वास्थ्य, मनोरंजन एवं सुरक्षा सम्बन्धी सेवाओं के विकास पर निर्धारित हैं यदि क्षेत्र में इन सेवाओं का वितरण सघन रूप में पाया जाता है। तो वहां सामाजिक विकास का स्तर उच्च कोटि का पाया जाता हैं वही इन सेवाओं के आभाव में मानव समाज का विकास निम्न कोटि के परिणाम का द्योतक होता है। साथ ही इन सेवाओं उत्तम ढग से उपयोग किया जाय तो क्षेत्र मे कृषि औद्योगिक एवं सामाजिक विकास स्तर मानव के विकास का आधार बन सकती है।

सन्दर्भः

1. रेखा, तिवारी (1998) : प्रतापगढ़ तहसील में केन्द्र स्थल एवं क्षेत्रीय अन्तः प्रक्रियायें उ.भा.भू.प. अंक 34 संख्या 1, 2 पृष्ठ संख्या 89-99

2. वर्मा, शिवशंकर एवं शाही सुनील कुमार (1987) : अवस्थापनात्मक तत्व एवं प्रादेशिक विकास एक सैद्धान्तिक अध्ययन उ.भा.भू.प. अंक 23 दिसम्बर 1987 पृष्ठ संख्या 35

3. द्विवेदी, अखिलेश्वर ,कुमार (2007) अवस्थापनात्मक तत्व एवं ग्रामीण विकास एवं संकल्पनात्मक अध्ययन उ0 भा0 भू0 प0 अंक 7 संख्या 1 जून 2007 पृष्ठ संख्या 9

4.Pandey, Rekha (1993): Socio Economic Facilities and Economic Development in PratapGarh Tahsil XV I.G.U. Bhuwaneshwer

5.Pandey J.N. & Pandey Rekha (1990): Spatial Organisation of Socio-Economic Facilities and Economic Development in PratapGarh District I.G.U. Symposium Gorakhpur